



उच्च शिक्षा में भाषा एक बाधा: द्विभाषी पाठ्यक्रमों में हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए चुनौतियाँ

कोमल खंडेलवाल

सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, जगन्नाथ विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान,

Email: mskomal01122@gmail.com

सार (Abstract)

भारत में अंग्रेजी भाषा का प्रभुत्व औपनिवेशिक इतिहास से जुड़ा हुआ है। भारत में केवल अंग्रेजी और हिंदी ही आधिकारिक भाषाएँ नहीं हैं, लेकिन दोनों का विशेष महत्व है। इस अध्ययन का उद्देश्य द्विभाषी पाठ्यक्रमों में हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों द्वारा सामना की जाने वाली बाधाओं का पता लगाना है। शोध की प्रकृति के अनुसार वर्णनात्मक शोध पद्धति के साथ गुणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया। डेटा अर्ध-संरचित साक्षात्कारों के माध्यम से एकत्रित किया गया तथा अध्ययन में 30 बी.एल.एड. (B.El.Ed.) पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों को शामिल किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह पता चला कि हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को द्विभाषी पाठ्यक्रमों में अनेक प्रकार की भाषा संबंधी बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

मुख्य शब्द (Keywords): द्विभाषी पाठ्यक्रम, भाषा बाधाएँ, वर्चस्व

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (Historical Perspective)

अंग्रेजी भाषा के प्रभुत्व के कारण भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में इसे शिक्षण की मुख्य भाषा के रूप में अपनाया गया है। यह प्रभुत्व औपनिवेशिक इतिहास से गहराई से जुड़ा हुआ है। भारत में अंग्रेजी भाषा का प्रारंभिक संपर्क भारतीयों और ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच व्यापारिक संबंधों से हुआ। समय के साथ ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों पर अपना नियंत्रण स्थापित किया। जैसे-जैसे ब्रिटिश प्रभाव बढ़ा, अंग्रेजी भाषा का उपयोग प्रशासन, व्यापार और शिक्षा के माध्यम के रूप में होने लगा। भारत में अंग्रेजी शिक्षा की शुरुआत 19वीं शताब्दी में 1835 में मैकॉले के मिनट्स के साथ हुई। इसके बाद कई अंग्रेजी माध्यम विद्यालय स्थापित किए गए। अंग्रेजी को अभिजात वर्ग (एलिट) की भाषा के रूप में बढ़ावा दिया गया और विद्यालयों को इसे पढ़ाने के लिए अनुदान दिए गए। भारत एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश है, इसलिए अंग्रेजी ने विभिन्न भाषाओं के लोगों के बीच संचार का माध्यम बनकर कुछ हद तक एकता स्थापित करने में भूमिका निभाई। यह एक ऐसी भाषा बन गई जिससे विभिन्न भाषाओं के लोग एक-दूसरे से संवाद कर सके।

1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद देश में अंग्रेजी की भूमिका को लेकर बहस शुरू हुई। सरकार द्वारा हिंदी को एकमात्र आधिकारिक भाषा बनाने के प्रयासों का उन क्षेत्रों में विरोध हुआ जहाँ हिंदी नहीं बोली जाती थी। अंततः एक द्विभाषी नीति अपनाई गई, जिसमें हिंदी और अंग्रेजी दोनों को आधिकारिक भाषाओं के रूप में मान्यता दी गई। आज भी भारत की शिक्षा प्रणाली में अंग्रेजी का महत्वपूर्ण स्थान है और यह व्यवसाय तथा पेशेवर



क्षेत्रों में व्यापक रूप से उपयोग की जाती है। भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा अंग्रेजी बोलने वाला देश भी है। यद्यपि हिंदी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, फिर भी अंग्रेजी विभिन्न क्षेत्रों में संचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन चुकी है। हालांकि, पूरे भारत में हिंदी का गहरा सांस्कृतिक और भाषाई महत्व है, साथ ही अन्य 21 अनुसूचित भाषाएँ भी अपनी-अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं।

भाषा संबंधी समस्याएँ और 'समितियाँ एवं आयोग'

स्वतंत्रता के बाद शिक्षा के विभिन्न पहलुओं—प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा और शैक्षिक सुधारों तक—को संबोधित करने के लिए कई आयोगों और समितियों का गठन किया गया। भारत की भाषा शिक्षा नीतियाँ समय के साथ विकसित हुई हैं, जो देश की भाषाई विविधता, ऐतिहासिक संदर्भ और शैक्षिक लक्ष्यों को दर्शाती हैं। भारतीय भाषा शिक्षा नीतियाँ एक ओर भाषाई विविधता को संरक्षित करने के प्रति देश की प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं, वहीं दूसरी ओर छात्रों को वैश्वीकृत दुनिया के लिए तैयार भी करती हैं।

कोठारी आयोग के अनुसार हिंदी एक सामान्य भाषा है। यह आवश्यक है कि भारत में प्रत्येक व्यक्ति को आंतरिक संचार के लिए हिंदी का कम से कम बुनियादी ज्ञान हो, और जिन्हें संघीय स्तर या राज्यों में आधिकारिक भाषा के रूप में इसका उपयोग करना है, उन्हें इसमें अधिक दक्ष होना चाहिए। अन्य आयोगों जैसे भारतीय शिक्षा आयोग (1882) और सैडलर आयोग (1917-19) ने भी भारत में भाषा शिक्षा के महत्व पर बल दिया। उन्होंने अनुशांसा की कि शैक्षणिक संस्थान मातृभाषा में मजबूत आधार प्रदान करें, जिससे विद्यार्थी अन्य भाषाओं को भी सहजता से सीख सकें। हालांकि, इन आयोगों ने यह भी माना कि भारत की भाषाई विविधता के कारण भाषा शिक्षा का मानकीकरण संभव नहीं है, और क्षेत्रीय भाषाओं की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए।

नीतिगत रूपरेखा (Policy Framework)

1968 और 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) ने हिंदी को शिक्षण के प्रमुख माध्यम के रूप में महत्व दिया तथा त्रिभाषा सूत्र पर जोर दिया, जिसमें विद्यार्थियों को हिंदी, अंग्रेजी और एक क्षेत्रीय भाषा सीखना अनिवार्य था। हालांकि, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इसे अधिक लचीला बनाते हुए तीन भाषाओं के चयन की स्वतंत्रता दी, जिसमें सांकेतिक भाषा (Sign Language) भी शामिल हो सकती है, और हिंदी या अंग्रेजी के अतिरिक्त कम से कम एक अन्य भाषा में प्रवीणता को प्रोत्साहित किया गया। साथ ही, प्रारंभिक शिक्षा में मातृभाषा या स्थानीय भाषा के महत्व को भी स्वीकार किया गया है। NEP 2020 में बहुभाषिकता (Multilingualism) पर विशेष बल दिया गया है, जिससे भाषा और संस्कृति की गहरी समझ विकसित होती है तथा समावेशिता और लचीलापन बढ़ता है। भारत सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में, प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक, शिक्षा को बढ़ावा देना है। इस नीति का एक प्रमुख घटक शिक्षा में भारतीय भाषाओं के उपयोग को प्रोत्साहित करना है, जिससे देश की विविध भाषाई विरासत का संरक्षण हो सके और छात्रों को उनकी मातृभाषा में मजबूत आधार मिल सके। इसके साथ ही अंग्रेजी को भी अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाता है ताकि छात्र वैश्विक स्तर पर प्रभावी ढंग से संवाद कर सकें।

द्विभाषी शिक्षा और उसकी भूमिका

हाल के वर्षों में द्विभाषी शिक्षा को विशेष महत्व मिला है, क्योंकि यह भाषाई विविधता को बढ़ावा देती है, विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमि के प्रति सहिष्णुता विकसित करती है और अंतर-सांस्कृतिक संवाद को प्रोत्साहित करती है। द्विभाषी पाठ्यक्रमों में दो भाषाओं में शिक्षण दिया जाता है, जिससे विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा तथा लक्ष्य भाषा दोनों में दक्षता विकसित करने का अवसर मिलता है। बैचलर ऑफ एलिमेंट्री एजुकेशन (B.El.Ed.) एक चार वर्षीय एकीकृत व्यावसायिक पाठ्यक्रम है, जो प्राथमिक शिक्षकों के लिए बनाया गया है। यह पाठ्यक्रम द्विभाषी प्रकृति का है, जिसमें हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं के शिक्षार्थियों को एक ही कक्षा में समायोजित किया जाता है। इस पाठ्यक्रम की परिकल्पना जयपुर विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग द्वारा



की गई थी। यह पाठ्यक्रम 1994-1995 शैक्षणिक सत्र में शुरू किया गया था और इसका उद्देश्य ऐसे प्रशिक्षित प्राथमिक शिक्षक तैयार करना है जो दोनों भाषाओं में दक्ष हों।

B.El.Ed. कार्यक्रम में विषय ज्ञान, बाल विकास, शिक्षण पद्धतियाँ, दार्शनिक आधार और संप्रेषण कौशल का समन्वित अध्ययन शामिल होता है।

भाषा बाधा और उच्च शिक्षा

भाषा, विशेष रूप से अंग्रेजी माध्यम के कक्षाओं में, प्रभावी अधिगम में एक महत्वपूर्ण बाधा बनती है, खासकर उन विद्यार्थियों के लिए जो गैर-अंग्रेजी भाषाई पृष्ठभूमि से आते हैं। उच्च शिक्षा में विभिन्न माध्यमों से आए विद्यार्थियों को अंग्रेजी को समझने और उसमें अभिव्यक्त करने में कठिनाई होती है, जिससे उनके शैक्षणिक प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और उनकी समग्र सफलता में बाधा उत्पन्न होती है। इसलिए यह आवश्यक है कि ऐसे शैक्षणिक अभ्यासों और संसाधनों की खोज की जाए, जो इन विद्यार्थियों को भाषा संबंधी बाधाओं को दूर करने और शैक्षणिक सफलता प्राप्त करने में सहायता कर सकें।

NEP 2020 और समावेशी शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बहुभाषिकता और समग्र विकास को बढ़ावा देती है। इसका उद्देश्य अधिक से अधिक पाठ्यक्रमों को द्विभाषी बनाना और विद्यार्थियों को उनकी क्षेत्रीय भाषाओं में उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान करना है। द्विभाषी पाठ्यक्रम स्थानीय ज्ञान और वैश्विक ज्ञान के बीच सेतु का कार्य करते हैं। यह आवश्यक है कि द्विभाषी शिक्षा में अल्पसंख्यक भाषा समूहों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं को समझा जाए और उन बाधाओं को दूर करने के लिए प्रभावी रणनीतियाँ विकसित की जाएँ, ताकि सभी विद्यार्थियों को समान शैक्षिक अवसर मिल सकें और समावेशी अधिगम वातावरण को बढ़ावा दिया जा सके।

प्रयुक्त शब्दों की क्रियात्मक परिभाषाएँ (Operational Definition of Terms Used)

द्विभाषी पाठ्यक्रम (Bilingual Courses):

ऐसे शैक्षिक कार्यक्रम जिनमें विद्यार्थियों को एक साथ दो भाषाओं में शिक्षा दी जाती है। इन कार्यक्रमों में शिक्षण दोनों भाषाओं के माध्यम से प्रदान किया जाता है।

भाषाई वर्चस्व (Language Hegemony):

कक्षा शिक्षण में एक भाषा का दूसरी भाषा पर प्रभुत्व या वर्चस्व स्थापित होना।

भाषाई बाधाएँ (Language Barriers):

भाषा की अपरिचितता के कारण विषय-वस्तु और संदर्भ को समझने में उत्पन्न होने वाली कठिनाइयाँ।

उद्देश्य (Objectives)

- ❖ शिक्षक और हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों के बीच संप्रेषण एवं अंतःक्रिया की स्थिति का अध्ययन करना।
- ❖ द्विभाषी पाठ्यक्रमों में हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाइयों का अध्ययन करना।
- ❖ उपलब्ध संसाधनों की पहचान करना।

शोध प्रश्न (Research Questions)

1. द्विभाषी कक्षाओं में कौन-कौन सी शिक्षण पद्धतियाँ अपनाई जाती हैं?
2. उच्च शिक्षा में हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को किन प्रमुख कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है?
3. हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए कौन-कौन से संसाधन उपलब्ध हैं?



शोध पद्धति (Research Methodology)

द्विभाषी पाठ्यक्रमों में हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों द्वारा अनुभव की जाने वाली कठिनाइयों का अध्ययन करने तथा उपलब्ध संसाधनों की पहचान करने के लिए वर्णनात्मक शोध पद्धति के साथ गुणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया।

इस अध्ययन की जनसंख्या जयपुर विश्वविद्यालय के बी.एल.एड. (B.El.Ed.) पाठ्यक्रम में अध्ययनरत हिंदी माध्यम के विद्यार्थी थे। प्रतिभागियों के चयन के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूना (Purposive Sampling) का उपयोग किया गया, जो एक गैर-प्रायिकता (Non-probability) विधि है, जिसमें केवल उन विद्यार्थियों को चुना जाता है जो अध्ययन के लिए उपयुक्त होते हैं।

डेटा संग्रह के लिए अर्ध-संरचित साक्षात्कार (Semi-structured Interviews) का उपयोग किया गया।

निष्कर्ष (Findings)

साक्षात्कारों को रिकॉर्ड किया गया और अध्ययन के लिए चार भाषा कौशल क्षेत्रों को आधार बनाया गया।

1. श्रवण कौशल (Listening)

श्रवण कौशल सूचना को प्राप्त करने और उस पर प्रतिक्रिया देने में सहायक होता है, लेकिन यदि श्रोता भाषा से परिचित नहीं होते, तो उन्हें जानकारी को समझने और उचित प्रतिक्रिया देने में कठिनाई होती है।

साक्षात्कार के दौरान एक प्रतिभागी ने कहा:

“कभी-कभी मैं क्लास के दौरान खो जाता हूँ क्योंकि मुझे कुछ समझ नहीं आता और फिर मुझे आगे का पूरा लेक्चर ही समझ नहीं आता है।”

विद्यार्थी व्याख्यान के दौरान स्वयं को असमंजस में पाते हैं क्योंकि वे व्याख्यान को समझ नहीं पाते और परिणामस्वरूप पूरा लेक्चर उनके लिए अप्रासंगिक हो जाता है।

दिल्ली में विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों से विद्यार्थी आते हैं, जो अपने-अपने बोलियों, उच्चारण और शब्दों के उच्चारण के तरीकों के साथ आते हैं। इस विविधता के कारण विद्यार्थियों के लिए शिक्षकों और सहपाठियों के उच्चारण को समझना कठिन हो जाता है।

हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को कक्षा में निम्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है:

- सीमित शब्दावली (Vocabulary)
- तेज़ गति से दिए जाने वाले व्याख्यान
- बातचीत की गति के साथ तालमेल बैठाने में कठिनाई
- विभिन्न उच्चारणों और बोलियों को समझने में समस्या

शिक्षक प्रायः अंग्रेज़ी में तकनीकी शब्दावली (Technical Terminology) का उपयोग करते हैं, जिसे विद्यार्थियों को हिंदी में अनुवाद करना पड़ता है। छात्रों की समझ को बेहतर बनाने के लिए कभी-कभी संदर्भानुसार उदाहरण हिंदी में दिए जाते हैं, लेकिन अधिकांश संवाद अंग्रेज़ी में ही होता है, जिससे हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए उसे समझना कठिन हो जाता है।

जटिल भाषा संरचना, तकनीकी शब्दावली और अपरिचित अभिव्यक्तियाँ (Idiomatic Expressions) हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए समझने में बाधा उत्पन्न करती हैं। विशेष रूप से तकनीकी शब्दावली एक बड़ी समस्या बन जाती है, क्योंकि कक्षा में अधिकतर अंग्रेज़ी शब्दों का ही प्रयोग किया जाता है।



2. बोलना (Speaking)

बोलना व्यक्तियों को स्वयं को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है, लेकिन कक्षा में अंग्रेजी में होने वाली बातचीत हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए आत्म-सचेतता (self-consciousness) और दबाव उत्पन्न करती है, क्योंकि वे भाषाई दक्षता और वर्चस्व से जूझते हैं।

हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को कक्षा में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे—

- भाषाई दक्षता की कमी
- अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का प्रभुत्व
- असमान सहभागिता
- अपर्याप्त समझ
- गलतियाँ करने का डर
- आत्म-संकोच

अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी अपनी बेहतर भाषा दक्षता के कारण चर्चाओं में अधिक सक्रिय रहते हैं, जबकि हिंदी माध्यम के विद्यार्थी कम प्रतिनिधित्व करते हैं, जिससे सहभागिता में असंतुलन उत्पन्न होता है। इसके अतिरिक्त, हिंदी माध्यम के विद्यार्थी अपनी सीमित व्याकरणिक जानकारी और उच्चारण (accent) की समस्याओं के कारण आत्म-सचेत महसूस करते हैं। गलतियाँ करने का भय उनकी कक्षा में भागीदारी को कम करता है और उनके आत्मविश्वास एवं आत्म-सम्मान को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। कक्षा में अंग्रेजी के लगातार उपयोग से उनकी प्रेरणा और शैक्षणिक प्रदर्शन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

3. पठन (Reading)

पठन ज्ञान अर्जन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, विभिन्न दृष्टिकोणों से परिचित कराता है और समझ को विस्तृत करता है। लिखित सामग्री के साथ जुड़ाव पूर्व ज्ञान को व्यवस्थित रूप से जोड़ने में सहायता करता है।

हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है:

- अध्ययन सामग्री की कमी
- जटिल भाषा
- सहायक संसाधनों का अभाव

शैक्षणिक लेखन में औपचारिक शब्दावली और तकनीकी शब्द (jargon) का प्रयोग होता है, जिससे उन्हें सामग्री समझने में कठिनाई होती है। साथ ही, उन्हें अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के बराबर शब्दावली विकसित करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करना पड़ता है।

एक प्रतिभागी ने कहा:

“सारी रीडिंग्स हिंदी में नहीं होती, जो बाहर के राइटर्स होते हैं उनका ट्रांसलेशन लाइब्रेरी में नहीं होता, तो हम फोन से स्कैन करके पढ़ लेते हैं।”

अधिकांश अध्ययन सामग्री केवल अंग्रेजी में उपलब्ध होने के कारण विद्यार्थी अवधारणाओं को समझने के लिए Google Translate और YouTube वीडियो का सहारा लेते हैं।

समय प्रबंधन भी एक बड़ी समस्या बन जाती है, क्योंकि विद्यार्थी सहायक तकनीकों का उपयोग करके अवधारणाएँ समझने में अतिरिक्त समय लगाते हैं, जिससे वे अपने सहपाठियों से पीछे रह जाते हैं। कक्षा चर्चाओं को समझने के लिए विद्यार्थी शब्दकोश (dictionary) की मदद से अंग्रेजी शब्दावली से परिचित होते हैं।



4. लेखन (Writing)

लेखन आत्म-अभिव्यक्ति का एक संरचित माध्यम है, जो अवधारणाओं को याद रखने और जानकारी को प्रभावी ढंग से संसाधित करने में सहायता करता है। हालांकि, हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को अंग्रेजी आधारित शिक्षण और अध्ययन सामग्री के कारण कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिससे परीक्षा के दौरान उनमें उच्च स्तर की चिंता (anxiety) उत्पन्न होती है। हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद करना उनके लिए चुनौतीपूर्ण होता है, क्योंकि वे दोनों भाषाओं की शब्दावली को आंतरिक रूप से ग्रहण कर चुके होते हैं। इसके अतिरिक्त, ब्लैकबोर्ड पर केवल अंग्रेजी में लिखे जाने के कारण उन्हें अवधारणाएँ समझने और नोट्स बनाने में कठिनाई होती है।

एक प्रतिभागी ने कहा:

“क्योंकि टीचर हिंदी माध्यम के नहीं हैं, इसलिए हमें कम नंबर मिलते हैं, इंग्लिश वालों से कम नंबर आते हैं।”

हिंदी माध्यम के विद्यार्थी अक्सर मूल्यांकन में पक्षपात महसूस करते हैं। समग्र रूप से, लेखन विद्यार्थियों के अधिगम और विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

चर्चा एवं निष्कर्ष (Discussion and Conclusion)

पहला उद्देश्य शिक्षक और हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों के बीच संप्रेषण एवं अंतःक्रिया की स्थिति का अध्ययन करना था। निष्कर्षों से पता चलता है कि कक्षा शिक्षण प्रायः पारंपरिक पद्धति पर आधारित है, जिसमें शिक्षक व्याख्यान देते हैं और विद्यार्थी निष्क्रिय रूप से जानकारी ग्रहण करते हैं। कक्षा में संप्रेषण प्रायः एकतरफा होता है, जिससे विद्यार्थी कम ही प्रश्न पूछते हैं। व्याख्यान पद्धति समय की दृष्टि से प्रभावी है और शिक्षक मौखिक तथा कभी-कभी दृश्य माध्यमों का उपयोग करके ज्ञान प्रदान करते हैं। विद्यार्थियों को नोट्स बनाने होते हैं।

हालांकि यह पद्धति उच्च शिक्षा में समय बचाने के कारण उपयोगी है, लेकिन द्विभाषी पाठ्यक्रमों में यह कम प्रभावी हो जाती है, क्योंकि शिक्षक अनजाने में केवल एक भाषा में ही शिक्षण करने लगते हैं।

द्विभाषी कक्षाओं में शिक्षण का ध्यान ज्ञान प्रदान करने पर अधिक होता है, जबकि विद्यार्थियों की ग्रहणशीलता (receptivity) की अनदेखी होती है। शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच सकारात्मक सहभागिता सीमित होती है।

हालांकि, महीने में एक बार छोटे समूहों में ट्यूटोरियल आयोजित किए जाते हैं, जहाँ शिक्षक विद्यार्थियों से संवाद करते हैं और उनकी समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करते हैं। समय की कमी और अन्य बाधाओं के कारण ये ट्यूटोरियल पर्याप्त प्रभावी नहीं हो पाते।

शिक्षक जटिल अवधारणाओं को सरल भागों में विभाजित करके स्पष्ट निर्देश देने का प्रयास करते हैं और विद्यार्थियों की पसंदीदा भाषा में उदाहरण भी देते हैं।

मूल्यांकन (Assessment)

मूल्यांकन मुख्यतः वार्षिक परीक्षाओं और गृहकार्य के आधार पर किया जाता है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों की समझ और प्रगति का आकलन करना है।

दूसरा उद्देश्य: कठिनाइयाँ

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान की कमी होती है, जिससे वे कक्षा में बोलने और लिखने में कम भाग लेते हैं।

चारों भाषा कौशलों में प्रमुख कठिनाइयाँ:

- **श्रवण (Listening):** उच्चारण, लहजे और शब्दावली की कमी के कारण समझ में कठिनाई।
- **बोलना (Speaking):** अंग्रेजी में चर्चा होने के कारण भागीदारी कम।



- **पठन (Reading):** उपयुक्त अध्ययन सामग्री की कमी और जटिल भाषा।
- **लेखन (Writing):** विचारों को एक भाषा से दूसरी भाषा में स्थानांतरित करने में कठिनाई।

तीसरा उद्देश्य: उपलब्ध संसाधन

अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि—

- कुछ पुस्तकें हिंदी में अनुवादित हैं, लेकिन अधिकांश सामग्री अंग्रेजी में ही उपलब्ध है।
- विद्यार्थी Google Translate और YouTube वीडियो का उपयोग करते हैं।
- शिक्षक ट्यूटोरियल के दौरान सहायता प्रदान करते हैं।
- विद्यार्थी सीनियर्स से हिंदी में नोट्स लेते हैं।
- विश्वविद्यालय पुस्तकालय में दोनों भाषाओं की पुस्तकें उपलब्ध हैं।
- सहायक तकनीक (Assistive Technology) जैसे अनुवादक, टेक्स्ट-टू-स्पीच आदि उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।
- ऑनलाइन डेटाबेस से शोध सामग्री प्राप्त होती है।

हालांकि, कुछ अध्ययनों के अनुसार हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को अभी भी पर्याप्त संसाधनों की कमी के कारण नुकसान उठाना पड़ता है और अंग्रेजी भाषा की समझ में कठिनाई बनी रहती है।

निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट है कि हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को द्विभाषी पाठ्यक्रमों में अनेक भाषाई, शैक्षणिक और मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसलिए आवश्यक है कि शिक्षण पद्धतियों, संसाधनों और नीतियों में सुधार कर इन बाधाओं को दूर किया जाए, ताकि समावेशी और समान अवसर आधारित शिक्षा सुनिश्चित की जा सके। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि इन भाषा संबंधी बाधाओं को पहचाना और दूर किया जाए, ताकि समान शैक्षिक अवसरों को बढ़ावा दिया जा सके और द्विभाषी शिक्षा में हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों की भाषाई एवं शैक्षणिक उपलब्धियों को सुदृढ़ किया जा सके। इस अध्ययन के निष्कर्ष शैक्षिक नीति निर्माताओं, विद्यार्थियों और शिक्षकों को उपयुक्त रणनीतियाँ और सहायता तंत्र विकसित करने में मदद कर सकते हैं, जिससे द्विभाषी पाठ्यक्रमों में हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए भाषा संबंधी बाधाओं को कम किया जा सके। यह शोध द्विभाषी शैक्षिक वातावरण को सुदृढ़ करने में योगदान देगा, जो हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों की भाषाई और शैक्षणिक प्रगति को सुनिश्चित करेगा।

संदर्भ (References)

- Bukhari, S. A. R. (n.d.). विदेशों में अध्ययनरत छात्रों की संभावनाओं को बाधित करने वाली भाषा और संस्कृति से संबंधित अवरोध।
- Chi, D. N. (2017). वियतनाम में द्विभाषी शिक्षा के कार्यान्वयन से संबंधित समस्याएँ। *TESOL Working Paper Series*, 15, 96–113. वेबसाइट: Hawaii Pacific University, <http://www.hpu.edu>
- Filipović, L. (2018). दूसरी भाषा में बोलना लेकिन पहली भाषा में सोचना: अंग्रेजी और स्पेनिश में कारणात्मक घटनाओं की स्मृति पर भाषा-विशिष्ट प्रभाव। *International Journal of Bilingualism*, 22.



- George, H., & Abdullah, H. (2021, September). छत्तीसगढ़ के हिंदी माध्यम के छात्रों द्वारा अंग्रेजी भाषा में होटल प्रबंधन एवं आतिथ्य पाठ्यक्रमों का अध्ययन करते समय सामना की जाने वाली चुनौतियाँ। *International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMASSS)*, 03, 78–84.
- Harrison, J., & Shi, H. (2016). उच्च शिक्षा में अंग्रेजी भाषा सीखने वाले छात्र: एक अन्वेषणात्मक संवाद। *Journal of International Students*, 6(2), 415–430.
- Hashmi, Q. I. (2016). भारत में हिंदी और उर्दू भाषी छात्रों तथा सऊदी अरब में भारतीय प्रवासियों द्वारा अंग्रेजी सीखने में आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन। *International Journal of Education*, 8.
- Hilt, L. T. (2016). साझा भाषा के बिना शिक्षा: नॉर्वे में नवागंतुक अल्पसंख्यक भाषा छात्रों की कक्षाओं में समावेशन और बहिष्करण की गतिशीलता। *International Journal of Inclusive Education*. <https://doi.org/10.1080/13603116.2016.1223179>
- Hossain, A. (2018). माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी भाषा सीखने की कठिनाइयाँ: ठाकुरगाँव जिले का एक अध्ययन। *Journal of Education and Training*, 5. doi:10.5296/jet.v5i2.13500
- Jagtap, S. (2015). वडोदरा शहर के अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत गैर-हिंदी भाषी कक्षा VII के छात्रों द्वारा अनुभव की जाने वाली अधिगम कठिनाइयों का अध्ययन।
- Kamara, A. (2004). गैर-मूल अंग्रेजी भाषी छात्रों का कॉलेज अनुभव: मैसाचुसेट्स विश्वविद्यालय (एमहर्स्ट) के अंतरराष्ट्रीय छात्रों पर आधारित एक अध्ययन। ScholarWorks@UMass Amherst.
- Kuo, Y.-H. (2011). संयुक्त राज्य अमेरिका में अंतरराष्ट्रीय स्नातकोत्तर छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली भाषाई चुनौतियाँ। *Journal of International Students*, 1(2).
- Mishra, K. G. (2017). भारत में स्नातक स्तर पर गणित के अध्ययन में हिंदी माध्यम के छात्रों द्वारा अनुभव की जाने वाली कठिनाइयों का अनुभवजन्य अध्ययन और इसके सामाजिक प्रभाव।
- Moissac, D. d., Drolet, M., Savard, J., Savard, S., Giasson, F., Benoît, J., Arcand, I., Lagacé, J., & Dubouloz, C. (2023). अल्पसंख्यक भाषा में सेवाएँ प्रदान करने की समस्याएँ और चुनौतियाँ: स्वास्थ्य एवं सामाजिक सेवा नेटवर्क में द्विभाषी पेशेवरों का अनुभव। University of Ottawa Press.
- Pandey, N., & Anshu, A. P. (2014). ज्ञान की भाषा? दिल्ली विश्वविद्यालय में अंग्रेजी माध्यम शिक्षण का एक अध्ययन। *The Delhi University Journal of the Humanities & the Social Sciences*, 1, 77.
- Shodhganga@INFLIBNET: Department of ELE/English Literature. (n.d.). Shodhganga. प्राप्ति तिथि: 20 जून 2023, <https://shodhganga.inflibnet.ac.in:8443/jspui/handle/10603/171837>
- Slattery, R. (2017). झारखंड के हिंदी माध्यम उच्च विद्यालयों में अंग्रेजी व्याकरण का शिक्षण। British Council.
- Toppo, S. (2021). भारत के हिंदी माध्यम विद्यालयों में अंग्रेजी को द्वितीय भाषा के रूप में सीखने के संबंध में छात्रों और शिक्षकों की मान्यताओं का अध्ययन।



- Unal, M., & Ilhan, E. (2017). उच्च शिक्षा में विदेशी भाषा शिक्षण और अधिगम में समस्याएँ और सुझाव: एक केस स्टडी। *Journal of Education and Training Studies*, 5(6).
- Zafar, S., & Khan, Z. A. (2017). तकनीकी लेखन कौशल पर प्रोजेक्ट-आधारित अधिगम (PBL) के प्रभाव का अनुभवजन्य अध्ययन। British Council.
- Zhang, Y., & Mi, Y. (2010). अंतरराष्ट्रीय छात्रों की भाषाई कठिनाइयों पर एक और दृष्टिकोण। *Journal of Studies in International Education*, 14(4).

Cite this Article:

कोमल खंडेलवाल, “उच्च शिक्षा में भाषा एक बाधा: द्विभाषी पाठ्यक्रमों में हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए चुनौतियाँ” The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp-243–251, Volume-05, Issue-01, April-2026, <https://theresearchdialogue.com/>



This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

THE
RESEARCH
DIALOGUE

Manifestation Of Perfection



CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

कोमल खंडेलवाल

For publication of Research Paper title

उच्च शिक्षा में भाषा एक बाधा: द्विभाषी पाठ्यक्रमों में हिंदी माध्यम
के विद्यार्थियों के लिए चुनौतियाँ

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-01, Month April, Year-2026, Impact
Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief



Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper
must be available online at: <https://theresearchdialogue.com/>
DOI : <https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.28>